पाठ 6. लड्डू ले लो

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य स्व-जागरूकता का कौशल विकसित करना है ताकि वे अपनी पसंद व नापसंद की पहचान कर सकें। यह कविता राष्ट्रकवि माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा लिखी गई है। कविता मनोरंजक है और यह हमारे पारिवारिक तथा सामाजिक मूल्यों की याद दिलाती है।

पाठ का सार

लड्डू बेचने वाला इस कविता में लड्डू की विशेषताएँ बताते हुए कह रहा है कि ये लड्डू धरती की तरह गोल हैं तथा इनका स्वाद लाजवाब है। ये बहुत महँगे नहीं हैं, केवल दो आने के चार हैं। जो इनको खरीदेगा, वह मज़ा लेगा और जो नहीं खरीदेगा, वह ललचाएगा। सभी लोग इनको हँसी-खुशी से खाते हैं। लड्डू बेचने वाला कहता है कि आज उसे आने में कुछ देर हो गई है क्योंकि वह माल बना रहा था। वह आगाह करता है कि बाज़ार अब लुटने को है अर्थात् उसके सारे लड्डू फटाफट बिकने को हैं इसीलिए जिन्हें खरीदना है वे जल्दी-जल्दी लड्डू खरीद लें।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  कविता का लय के साथ वाचन करें और बच्चों से उसका अनुसरण करने को कहें। हाव-भाव व भंगिमा के साथ बच्चों को कविता याद करके सुनाने को कहें। बच्चों से बातचीत करें और फेरीवाले से जुड़े कुछ संस्मरण सुनाने को कहें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 23** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य व्याकरण एवं रचना पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - तुक वाले शब्दों से बच्चे परिचित हैं ही, उन्हें तुकांत शब्दों का प्रयोग करते हुए कुछ पंक्तियाँ बनाने को कहें, जैसे–पैसे लेकर आओ चार, चलो घूमने तब बाज़ार।
  - बच्चों से तुकांत शब्दों से जुड़ा खेल कराया जा सकता है। जैसे–एक बच्चा 'रात' बोले तो दूसरा बच्चा 'बात' बोले। फिर तीसरा बच्चा 'सात' बोले और इसी प्रकार खेल आगे बढ़ता रहे।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - बच्चों को हिदायत दें कि वे अकेले हलवाई की दुकान पर न जाएँ। हलवाई से बातचीत करने में आदर का भाव ज़रूर व्यक्त करें।
  - गोल वस्तुओं के नाम पता करके कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार बनाने के लिए प्रेरित करें–सूरज गोल, चंदा गोल।